कच्छ लोक संगीत

कला वारसो ट्रस्ट

कला वारसो ट्रस्ट कलाकारों का एक ऐसा संगठन है, जिसका उद्देश्य क्षेत्र के लोक कलाकारों एवं लोक कला शैलियों को प्रोत्साहित करना, लुप्तप्राय कला शैलियों का पुनरुद्धार तथा संगीत सहित कच्छ की लोक कला शैलियों का संरक्षण है। यह कच्छ लोक कला शैलियों को संरक्षित करने के अपने संकल्प के तहत लुप्तप्राय 'रेयान' नामक प्रस्तुति को क्षेत्र के विभिन्न भागों में प्रदर्शित कर लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

साहित्य अकादेमी

रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001

वेबसाइट : http://sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/index.jsp

साहित्योत्सव
Festival of Letters
21 - 26 February 2017

Enchanting Expressions of India

Kutch Folk Music:

Presented by Kala Varso trust

February 21, 2017

Kutch Folk Music

Music and dance are essential parts of the daily lives of the Kutch people. The region has a rich and ancient heritage of folk musical forms.

The festivals of the region are marked by fervour, colour, dance and soothing music.

Kutchi music is generally stratified into three categories – classical, folk and Sufi. Compared to the other two categories, Kutch folk music is unstructured, open and appeals to the heart of the common man as they deal directly with the lives and happenings of ordinary people.

Like Kutch Sufi music, Kutch folk music also contains lofty philosophy, mystical outpourings and deep thoughts but, it is in the language of the common people.

The unique feature of Kutch folk music is the presence of variety of instruments like *tabla, nagara, murli, janjhra, manjira, khanjari, ghaghar, flute,duff, dholak, damaru, daklu, nagfani* and *bhorrindo*. Some of these instruments are very ancient in origin.

Kala Varso Trust

Kala Varso Trust is an organization of artists with the objective of the preservation of Kutch folk art forms including music, revitalization of the dying art forms and promotion of folk art and folk artists of the region. It has been trying to popularize the *Reyan* mode of performance by taking it to various parts of the region in its bid to prevent Kutch folk art forms from extinction.

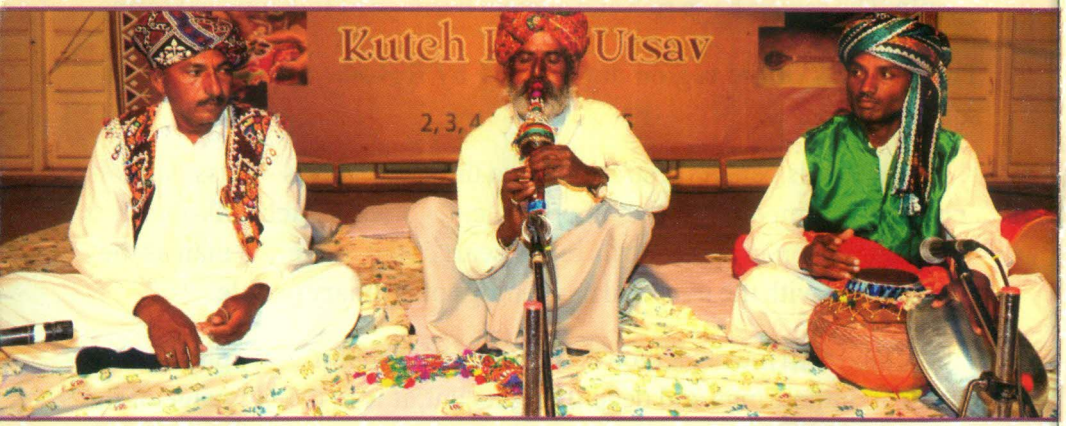

SAHITYA AKADEMI

Rabindra Bhavan, 35, Ferozeshah Road, New Delhi-110001

Website: http://sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/index.jsp

साहित्योत्सव
Festival of Letters
21 - 26 February 2017

भारत की सम्मोहक अभिव्यक्तियाँ

कला वारसो ट्रस्ट द्वारा प्रस्तुत

कच्छ लोक संगीत

21 फ़रवरी 2017

कच्छ लोक संगीत

संगीत और नृत्य कच्छ लोगों के दैनिक जीवन का आवश्यक भाग है। क्षेत्र में लोक संगीत की विभिन्न शैलियों की समृद्ध एवं प्राचीन विरासत है।

क्षेत्र के उत्सव उत्साह, आनंद, नृत्य और शांतिदायक संगीत से परिलक्षित होते हैं।

कच्छी संगीत को सामान्यतः तीन वर्गों में बाँटा गया है : शास्त्रीय, लोक एवं सूफी। अन्य दो वर्गों की तुलना में कच्छ लोक संगीत अनगढ़, मुक्त और आम आदमी के हृदय को छूनेवाला है, क्योंकि ये सीधे तौर पर आम लोगों के जीवन और खुशियों से जुड़े हैं। कच्छ सूफी संगीत की तरह ही कच्छ लोग संगीत भी उत्कृष्ट दर्शन, रहस्यात्मक उद्‌गार और गहन विचारों से परिपूर्ण है। लेकिन, यह आम आदमी की भाषा में है। तबला, रगड़ा, मुरली, झांझर, मंजीरा, कंजरी, घघर, बाँसुरी, डफली, ढोलक, डमरू, डकलू, नागफनी और भोर्रिन्दो जैसे विविध वाद्ययंत्रों का उपयोग कच्छ लोक संगीत की विशिष्टता है। इनमें से कुछ वाद्ययंत्र बहुत प्राचीन हैं।